वर्ष-12, अंक 37 वां, जनवरी-मार्च 2015

स्थापना वर्ष- 1918

गोलापूर्व जैन

प्रतिष्ठा पितामह
पं. गुलाबचंद जी पुष्प स्मृति विशेषांक

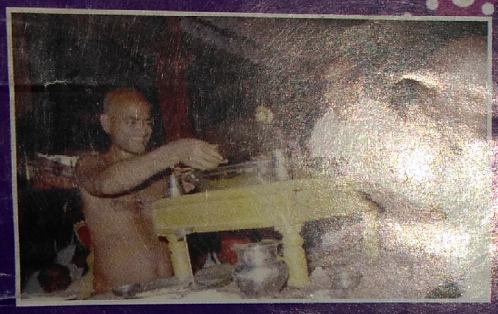

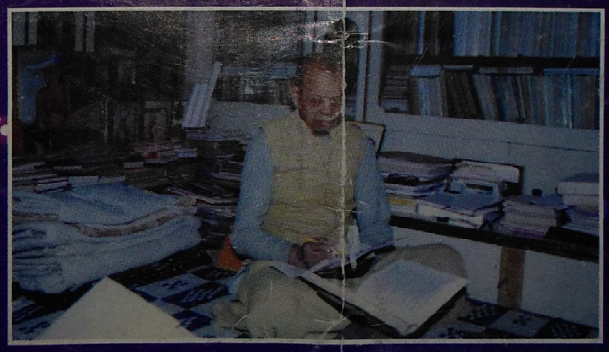

जन्म
10 जुलाई 1924

समाधिस्थ
5 जनवरी 2015

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा

(रजि. क्र. 06/09/01/06188/07)

प्रधान कार्यालय- द्वितीय तल, तीर्थंकर परिसर,
डॉ. पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य मार्ग
नमकमण्डी, कटरा बाजार, सागर 470 002 (म.प्र.) फोन-07582-243101

प्रागैतिहासिक नवागढ़ : श्रद्धेय पुष्प जी

डॉ. स्नेहरानी जैन सागर

भारत भूमि देव भूमि है। जहाँ जैन तीर्थंकरों के साथ गौतमबुद्ध, रामचंद्र, श्रीकृष्ण, हनुमान जैसे महापुरुषों ने जन्म से लेकर इसकी माटी को गोरवान्वित किया है। भारतभूमि महापुरुषों की तप साधना से निरंतर अर्जित होती आयी हैं। इसकी गोद में कई तीर्थ हैं जिनसे भव्य जीवों में इस संसार के दुखों से छुटकारा पाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

प्राकृतिक परिवर्तन से कई महान तीर्थ, काल, कल्वित होकर पृथ्वी के गर्भ में समा गये जो, आज जगह-जगह उद्घाटित हो रहे हैं। जन-जन की आस्था एवं केन्द्र आज भी लोगों के दुःख संताप दूर कर उनको भौतिक, शारीरिक एवं मानसिक तापों का शमन कर रहे हैं। ऐसे ही प्राचीन था नवागढ़ (नंदपुर) जो ललितपुर जिले के नावई ग्राम में स्थित है।

800-900 की कुल आबादी वाले इस छोटे से गांव की अतिशयकारी मनोहारी 900 वर्ष प्राचीन प्रतिमा के साथ 10-12 सांगोपांग प्रतिमा एवं शताधिक भव्य प्रतिमाओं को उद्घाटित करने का सौभाग्य पं. गुलाबचंद 'पुष्प' एवं उनके साथियों को प्राप्त हुआ।

पुष्प जी भगवान अरनाथ स्वामी की पुनः प्रतिष्ठा का संकल्प लेकर पं. शीलचंद्र जी न्यायतीर्थ साढूमल, ब्र. आत्मानंदजी, पं. ब्र. मूलचंद्रजी प्रतिष्ठाचार्य के साथ प्रांतीय जैन समाज एवं स्थानीय जैन समाज के वरिष्ठजनों के सहयोग से कार्य आरंभ किया। साधनविहीन इस ऊजाड़ क्षेत्र पर विकास कार्य दुरूह ही नहीं अत्यंत असंभव प्रतीत होता था, पर सभी की दृढ़ इच्छा शक्ति ने इसे पूर्ण कर दिखाया।

नवागढ़ उद्भव : पं. गुलाबचंद्र 'पुष्प' प्रतिष्ठाचार्य

8 अप्रैल 1959 चैत्र कृष्णा अमावस्या संवत 2015

प्रथम बैठक :	-	30 नवम्बर 1959 मार्गशीर्ष कृष्ण 30 संवत् 2016
		अध्यक्ष सिं. माणिकचंद्र जी ककरवाहा
		संयोजक - पं. नीरज जैन सतना, पं. गुलाबचंद्र 'पुष्प', ककरवाहा
प्रथम मनोनयन	-	अध्यक्ष - मनकू सिंघई, ककरवाहा
		मंत्री - धर्मचंद्र जी बजाज, गुढ़ा
		कोषाध्यक्ष - सेठ हल्काई जैन, मैनवार
प्रथम परामर्श	-	एडवोकेट अभिनंदन टडैया, ललितपुर
		एडवोकेट बाबू हरिप्रसादजी, ललितपुर
		सेठ पन्नालाल जी सोजना, सुखलाल जी
		सरपंच - परमानंद यादव, नावई
कार्य शुभारंभ	-	श्रुत पंचमी ज्येष्ठ सुदी पंचमी 2016, तदनुसार 11 जून 1959
प्रथम आयोजन	-	13 जुलाई 1959 तदनुसार आषाढ़ सुदी 8, सोमवार वि.स. 2016 सिद्धचक्र महामंडल विधान
		आयोजक - स.सि. नंदलाल जी, सि. स्वरूपचंद जी, सि. बल्देव प्रसादजी
		विधानचार्य - पं. नीरज जैन, सतना
		निर्देशक - धर्मभूषण गुरुवर पं. शीलचंद जी साढ़मल
द्वितीय आयोजन	-	श्री नवकेवल लब्धि विधान 1 जनवरी 1960, पौष शुक्ल संवत् 2016
		आयोजक - सेठ कन्हैयालाल जी नाथूराम जी मैनवार
संग्रहालय शिलान्यास	-	1 जनवरी 1960 पौष शुक्ल 3 स. 2016
विधानाचार्य	-	ब्र. पं. मूलचंद्र प्रतिष्ठाचार्य
शिलान्यासकर्ता	-	श्री परशुराम यादव, सब इंस्पेक्टर पुलिस थाना
उपस्थित	-	मुखिया मजबूत सिंह, जू मैनवार
		ठाकुर हनमतसिंह जू, कवराटा
		ठाकुर साहब जू, सड़कौरा
		मुखिया परमानंद जी यादव, नावई
		श्री छक्कीलाल यादव, श्री देवीसिंह गुजर, सेठ हीरालाल, हटा
प्रथम वार्षिक मेला	-	27 से 29 फरवरी 1961, फाल्गुन शुक्ल 1 से 3 संवत 2016
		पं. शीलचंद्र जी न्यायतीर्थ, साढ़मल, ब्र. आत्मानंदजी
परकोटे का शिलान्यास	-	24 सितम्बर 1960, शनिवार, अश्विन शुक्ल 4 सं. 2016
		मुंशी श्री सेवसिंह जी कुशवाहा, थाना सोजना
द्वितीय मनोनयन	-	अध्यक्ष - सिं मथुराप्रसाद जी, महरोली
		मंत्री - सिं. सनतकुमार एडवोकेट, ललितपुर
		कोषाध्यक्ष - सेठ दयाचंद्र जी सर्राफ, मैनवार
द्वितीय पंचकल्याणक	-	गजरथ 31 जनवरी 1985 से 5 फरवरी 1985
		माघ शु. 10 गुरुवार से मा.शु. 15 मंगलवार संवत 2041
		मंगल सान्निध्य - मुनिश्री नमिसागरजी (पठा वाले)
		प्रतिष्ठाचार्य - पं. गुलाबचंद्र जी 'पुष्प' (टीकमगढ़)
		समारोह अध्यक्ष - बाबू घनश्यामदास जी, टीकमगढ़
		मंत्री - श्री ज्ञानचंद्र जी नायक, टीकमगढ़
		विशेष - क्षुल्लक दीक्षा समारोह
तृतीय पंचकल्याणक त्रय	-	14 जनवरी से 18 जनवरी 2011
गजरथ महोत्सव		पौष शुक्ल 9 शुक्रवार से माघ कृ. 2 शुक्रवार 2067

मंगल सान्निध्य : मुनि श्री विशुद्धसागर जी ससंघ
संरक्षण : पं. गुलाबचंद जी 'पुष्प'
प्रतिष्ठाचार्य : ब्र.जयकुमार 'निशांत'
समारोह अध्यक्ष : सिं. महेन्द्रकुमार जी, बड़ागांव
मंत्री - श्री प्रवीणकुमार जी (दैनिक विश्व परिवार, झांसी)

उल्लेखनीय है कि ज्ञात इतिहास से नवागढ़ (नंदपुर) की पावन भूमि पर प्रथम पंचकल्याणक सन् 1145 ई. तदानुसार विक्रम संवत 2003 से सम्पन्न हुआ जिसके साक्ष्य संग्रहालय में रखी 7-8 प्रतिमायें हैं।

मानस्तम्भ शिलान्यास	-	26 अप्रैल शुक्रवार, 2013
मंगल सान्निध्य	-	मुनिश्री विनिश्चय सागर
शिलान्यासकर्ता	-	श्री रमेशचंद जी, आनंद जैन, अनुज जैन, अखलेश जैन, अंकुश जैन बण्डा वाले, सागर एवं परिवार
भोजनालय शिलान्यास	-	26 अप्रैल 2013
शिलान्यासकर्ता	-	श्री अनिलकुमार जैन, साड़ी वाले, दरियागंज, दिल्ली
भोंयरा विस्तार शुभारंभ	-	26 अप्रैल 2013
सौजन्य	-	श्री नरेन्द्रकुमार, अनुपम जैन, संयम जैन, लोकविहार, दिल्ली
त्यागीव्रत भोजनशाला शुभारंभ	-	26 अप्रैल 2013
सौजन्य	-	श्री विजय कुमार जैन, नोयडा (उ.प्र.)
संग्रहालय शुभारंभ	-	31 मार्च 2014
सान्निध्य	-	आ. श्री विभवसागर जी, आ. श्री विशाश्री माताजी संघ,
शिलान्यासकर्ता	-	श्री राजपाल जैन, राजबहादुर जैन, राजेन्द्रकुमार जैन, राजदीप जैन, सुशील जैन, बटन वाले दिल्ली
पंचबालयति गर्भगृह शिलान्यास	-	31 मार्च 2014
सौजन्य	-	सकल दि. जैन समाज, फिरोजपुर झिरका (हरियाणा)
पंचबालयति शृंगार मंडप शिलान्यास	-	31 मार्च 2014
शिलान्यासकर्ता	-	श्री सुनीलकुमार प्रवीणकुमार सर्राफ, मेरठ
पंचबालयति वेदी शिलान्यासकर्ता	-	श्री प्रमोदकुमार, पीयूष जैन, ईशान जैन बारदाना वाले
पंचबालयति शिखर शिलान्यास	-	23 जून 2014
सौजन्य	-	श्री सुमतचंद निर्मलकुमार बैटरी, आगरा

श्री कुंथुनाथ शिखर शिलान्यास	-	23 जनवरी 2014
सौजन्य	-	श्री शिखरचंद जी आगरा
चंद्रालय द्वार सौजन्य	-	श्री नरमल झांझरी डीमापुर

यहाँ की पुण्य ऊर्जा को मुनिश्री आदिसागर जी महाराज ने अनेक दिनों तक प्रवास करके बढ़ाया। क्षुल्लक चिदानंद सागर के दो चातुर्मासों में क्षेत्रीय समाज को नवागढ़ (नंदपुर) अतिशय क्षेत्र से परिचित कराया। यहाँ की पर्वत श्रृंखला में स्थित गुफाओं में साधना करके उन्होंने अपना जीवन सार्थक किया।

जैसे जैसे काल व्यतीत हुआ, क्षेत्र के प्रति लोगों की आस्था एवं विश्वास बढ़ता चला गया। देश-विदेश से आने वाले भक्तों के साथ दिशा एवं दशा बदलती गई। कई विशेष जैनाचार्यों, मुनिसंघों एवं आर्यिका माताजी यथा आ. श्री विद्यासागर जी, आ. देवनंदी जी, आ. विरागसागर जी, आ. पद्मनंदीजी, आ. विशुद्धसागर जी, आ. विभवसागर, आ. वर्धमानसागर जी, ऐ. उदारसागरजी (वर्तमान में उपा. उदारसागरजी), आ. निश्चयसागर जी, मुनिश्री सुधासागर जी, मुनिश्री अभयसागर जी, आ. अनन्तमति जी, आ. गुणमति जी, आ. विशाश्री माताजी सहित अनेक संघों की पदरज से यहाँ की ऊर्जा वृद्धिगत हुई।

'पुष्प' जी ने नवागढ़ के विकास को अपना लक्ष्य बना अपने सम्मान में मिलने वाली राशि को समर्पित करके क्षेत्रीय समाज एवं श्रेष्ठीजनों के सहयोग से विकास कार्य आगे बढ़ाया। आपने सन् 1985 में द्वितीय गजरथ एवं सन् 2011 में तृतीय गजरथ सम्पन्न कर इस क्षेत्र को सम्पूर्ण भारतवर्ष में विख्यात कराया।

आपके चतुर्थ पुत्र ब्र. जयकुमार निशांत ने आपकी धरोहर को सहेजते हुए इतिहासविदों, वास्तुविदों, पुरातत्वविदों के सहयोग से इस क्षेत्र की पहाड़ियों में स्थित गुफाओं, बावड़ियों, शैलाश्रयों को खोजने के साथ शैलचित्रों की श्रृंखला को उद्घाटित कर इस क्षेत्र को प्रागैतिहासिक काल का स्थापित कर सभी को अचंभित किया।

डॉ. भागचन्द्र भागेन्दु दमोह, डॉ. कस्तूरचंद जैन सुमन महावीर जी, डॉ. एपी. गौड़ झांसी, इंजी. एम.एस. जैन सोनीपत, डॉ. एस.एक. दुबे झांसी, डॉ. ए.के. खन्ना दिल्ली, इंजी. पी.सी. जैन दिल्ली, डॉ. स्नेहरानी जैन सागर, डॉ. मकसूद अहमद सागर ने यहां के संग्रहालय में विद्यमान पुरावशेषों एवं पहाड़ी पर स्थित जैन शासक की आकृति से इसे अति समृद्धशाली राजधानी बताया है। यहां के टीलों से न जाने कितने रहस्य उद्घाटित होंगे जिनसे जिनशासन की ऐतिहासिकता सांस्कृतिक एवं धार्मिकता के विशेष आयाम स्थापित किये जायेंगे।

'पुष्प' जी सार्थक श्रम करते-करते शरीर से तो महाप्रयाण कर गये पर उनके कार्य, उनका समर्पण सभी को हमेशा प्रेरणा देकर प्रकाश स्तम्भ की तरह आलोकित करता रहेगा।